بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 28 Agust 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(ज़हूर महीने की तिथि 28,1405 हश)

शुक्र गुज़ारी के हवाले से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अमली नमूने।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 28.08.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب.143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो कोशिशें कीं वो ज़ाहिर हैं। आप अलैहिस्सलाम अपने मददगारों के भी बहुत शुक्रगुज़ार होते थे जिन्होंने आप अलैहिस्सलाम के इस मिशन को पूरा करने के लिए किसी भी राह में ख़िदमत की।

चुनांचे हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने 4 अक्टूबर 1899 ई० को इश्तहार में फ़र्मायाः यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है कि हर एक अहलल्लाह के गिरोह को अपनी इब्तिदाई हालत में चंदों की ज़रूरत पड़ती है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कई मर्तबा सहाबा (रज़ि०) पर चंदे लगाए जिनमें हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु सब से बढ़ कर रहे। सो मर्दाना हिम्मत से इमदाद के लिए बिला तवक़्क़ुफ़ क़दम उठाना चाहिए। हर एक अपनी मक़दरत के मुवाफ़िक़ इस लंगर ख़ाना के लिए मदद करे। मैं चाहता हूँ कि अगर मुमकिन हो तो एक ऐसा इंतज़ाम हो कि हम लंगर ख़ाना के सर दर्द से फ़ारिग़ हो कर अपने काम में बा-फ़राग़त लगे रहें और हमारे औक़ात में कुछ हर्ज न हो जो हमें मदद देते हैं। आख़िर वो ख़ुदा की मदद देखेंगे।

मैं इस बात के लिखने से रह नहीं सकता कि इस नुसरत और जानफ़िशानी में अव्वल दर्जा पर हमारे ख़ालिस मुख़्लिस हुबबी फ़िल्लाह मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब रज़ि० हैं जिन्होंने न सिर्फ़ माली इमदाद की बल्कि दुनिया के तमाम तअल्लुक़ात से दामन झाड़ कर और फ़क़ीरों का जामा पहन कर और अपने वतन से हिजरत कर के क़ादियान में मौत के दिन तक आ बैठे और हर वक़्त हाज़िर हैं। अगर मैं चाहूँ तो पूर्व में भेज दूँ

या पश्चिम में। मेरे नज़दीक यह वो लोग हैं जिन की निस्बत बराहीने अहमदिया में यह इल्हाम है: اَصْحَابُ الصُّفَّةِ وَمَا اَدْرَاكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّةِ(असहाबुस सुफ़्फ़ति वमा अदराका मा असहाबुस सुफ़्फ़ह)। और हज़रत ममदूह से दूसरे दर्जा पर हुबबी फ़िल्लाह मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी हैं। और उन को तो पहले ही ख़ुदा तआला ने दुनिया के मनासिब और जाह तलबी की मुनासबत नहीं दी मगर अब वो बिल्कुल दुनयवी ख़्यालात को भी इस्तीफ़ा दे कर इस दरवाज़े पर बैठे हैं और दिन रात अपने दिमाग़ से फ़ौक़ुल ताक़त काम ले कर ख़िदमत-ए-दीन कर रहे हैं और जुमा की नमाज़ में बहुत से हक़ायक़ व मआरिफ़ क़ुरआन शरीफ़ बयान करते और मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचाते हैं और मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब के हम-शहर हकीम फ़ज़्ल दीन हैं और वो भी क़रीबन उसी जगह रहते और ख़िदमात में मशगूल हैं।

इसके बाद आप अलै. ने डॉ० बूड़े ख़ान साहब, ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब लाहौरी और डॉ० मिर्ज़ा यअक़ूब बेग साहब कलानौरी, डॉ० मोहम्मद इस्माईल साहब, डॉ० अब्दुल हकीम ख़ान साहब, मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहब, साहबज़ादा सिराजुल हक़ साहब, सेठ अब्दुल रहमान साहब का भी ज़िक्र फ़र्माया। फ़र्माया कि सेठ साहब माहवार एक सौ रुपया बिला नाग़ा भिजवाते हैं और कई मर्तबा पाँच सौ तक रक़म भेजी है। इसी तरह हुबबी फ़िल्लाह शेख़ रहमतुल्लाह साहब ताजिर लाहौर का ज़िक्र फ़र्माया जिन्होंने मुक़द्दमात के लिए बहुत सारी रक़म हदिया की। फिर आप अलैहिस्सलाम ने नवाब मोहम्मद अली ख़ान साहब का भी ज़िक्र फ़र्माया।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम मामूली ख़िदमत करने वालों के भी शुक्रगुज़ार होते थे। ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब के मुहल्ले में एक शख़्स फालूदा फ़रोख़्त करता था। उसने एक दफ़ा इस ख़्वाहिश का इज़हार किया कि वो हुज़ूर अलैहिस्सलाम को फालूदा पेश करे। चुनांचे हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब उन के मकान पर तशरीफ़ लाए तो आप अलै. की इजाज़त से उसको बुलवाया। उसने फालूदा बना कर हुज़ूर अलैहिस्सलाम को पेश किया। आप अलै. ने फ़र्माया बड़ा अच्छा है। फिर उसने दोस्तों के लिए दस बीस प्याले भेजे। हुज़ूर अलै. ने उसको दो रुपये भेजे मगर उसने लेने से इनकार कर दिया और कहा मुझे रक़म से सरोकार नहीं मुझे हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सामने ले जाओ। चुनांचे वो हुज़ूर अलै. के पास गया। आप अलैहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ की और ज़ज़ाकुमुल्लाह फ़र्माया।

हज़रत इब्राहीम बक़ापूरी साहब रज़ि० बयान करते हैं कि एक दफ़ा जमाअत सियालकोट में से चंद अहबाब ने कुछ रुपया बतौर हदिया पेश किया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने पहले अलहम्दुलिल्लाह कहा फिर ज़ज़ाकुमुल्लाह। जिस से हमारे ईमान में एक क़िस्म की तरक़्क़ी हुई कि पहले हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया फिर हमारे लिए दुआ फ़र्माई।

एक वाक़िआ ज़ुलफ़िक़ार अली ख़ान गोहर साहब बयान करते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अलैहिस्सलाम बैतुददुआ के नीचे वाले कमरे से बाहर आए। मैं उसके सामने मुक़ीम था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बालों में मेहंदी लगाई हुई थी। मुझे कहा कि मौलवी सैयद सरवर शाह साहब से कह दें कि कुछ खाना हमारे लिए यहाँ ले आएँ। मैंने पैग़ाम पहुँचाया तो देखा कि खाना बिल्कुल ख़त्म था। मौलवी साहब का चेहरा सफ़ेद हो गया कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के लिए कोई खाना नहीं बचा। बहरहाल उन्होंने एक छोटे से प्याले में दूध लिया और तीन तोस और शकर ली और हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सामने हाज़िर हुए। अर्ज़ की कि और कुछ नहीं है।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने निहायत शुक्र के साथ जो चेहरे से ज़ाहिर था खाना लिया। दो तोसों को निकाल कर शकर से लगा कर खा लिया और पानी पी लिया। अगस्त 1900 ई० को आप अलैहिस्सलाम ने एक ख़त में हज़रत नवाब मोहम्मद अली साहब रज़ि० का शुक्रिया अदा किया कि आप ने एक निहायत नफ़ीस पारचा बतौर तोहफ़ा भिझवाया है। लिबास के बदले में आप अलैहिस्सलाम ने उनके लिए दुआ फ़र्माई कि अल्लाह तआला

इसके एवज़ में अपने बे-इंतहा और ना-मालूम करम और फ़ज़ल करे और लिबास-ए-तक़वा से कामिल तौर से औलिया और सुलहा के रंग से मुशर्रफ़ फ़र्मा दे।

एक ख़त में हज़रत डॉ० ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब रज़ि० को फ़र्माया: आप की तरफ़ से 50 रुपए मुश्किल वक़्त में पहुँच गए। ऐसे नाज़ुक और ज़रूरत के वक़्त में जबकि बद-तीनत ने अदालत में मेरे पर मुक़द्दमा उठाया हुआ है आप का मुतवातिर (निरंतर) माली मदद करना क़ाबिल-ए-शुक्रगुज़ारी है।

एक सहाबी कहते हैं कि मैंने अहमदियत क़बूल की और अपने घर वालों से इसको पोशीदा रखा। कुछ अरसा बाद भेद खुल गया। वालिद साहब ने ख़ाकसार को साफ़ जवाब दे के घर से निकाल दिया कि तुम अहमदी हो गए हो। मैंने एक दुकान खोल ली। ख़ाकसार दर्ज़ी का काम करता था। मुझे दिली शौक़ हुआ कि मैं हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के लिए एक पोशाक बनाऊँ। चुनांचे मैंने एक कुरता और शलवार बनाई और एक कोट भी तैयार किया। किसी से क़ादियान का किराया पकड़ कर पहुँच गया। यह जुमा का दिन था। मेरी ख़्वाहिश थी कि आज ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में यह तोहफ़ा पेश करूँ ताकि आप अलै. जुमा पर ज़ेब-ए-तन फ़र्माएँ। मुझे क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहब दुकान पर मिले। उनसे ज़िक्र किया तो वो मुझे हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास ले गए। आप अलैहिस्सलाम एक तख़्त पर बैठे थे और कुछ लिख रहे थे। क़रीब ही ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब चटाई पर बैठे थे। हम भी बैठ गए। ख़्वाजा साहब ने हमसे पूछा कि क्या मैं आपका मक़सद पेश करूँ। फिर ख़्वाजा साहब ने वो कपड़े हुज़ूर अलैहिस्सलाम को पेश किए और अर्ज़ की कि लड़के की ख़्वाहिश है कि हुज़ूर अलै. इन कपड़ों को पहन कर जुमा की नमाज़ पढ़ें। हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ने उसी वक़्त (अंदर जा कर) वो लिबास ज़ेब-ए-तन फ़र्माया। कोट क़दरे तंग था। मैं उसको बाज़ार ले आया कि खोल कर कुछ ठीक करूँ। जब वापस लाया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फिर पहना मगर आप अलै. को अभी भी तंग था। बटन बंद न होते थे। ताहम मेरी ख़ुशी और तवज्जो के लिए खींच तान कर बटन बंद कर लिए।

अहमदी क़ौम के नाम एक ख़त में आप अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं: अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू। सब से पहले मुझे अल्लाह तआला का शुक्र दिल में जोश मारता है जिसने मेरी जमाअत को सच्ची इरादत और मोहब्बत और हमदर्दी अता फ़र्माई है। अगर ख़ुदा तआला का फ़ज़ल उनके साथ न होता तो यह तौफ़ीक़ उनको हरगिज़ न दी जाती कि वो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के क़दम पर इस दर्जा की अतात करते कि बावजूद अपनी माली मुश्किलात और कमी-ए-आमदनी के अपनी ताक़त से बढ़ कर ख़िदमत-ए-माली में मशगूल होते। मैं दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला उन सब के मालों में बरकत दे और यह नुसरत और इआनत जो वो दीनी अग़राज़ की तक्मील के लिए कर रहे हैं, ख़ुदा तआला दोनों जहानों में उनकी भलाई का मोजिब करे। आमीन सुम्मा आमीन।

फिर एक मौक़े पर फ़र्माया: अल्लाह तआला ने जिन पर फ़ज़ल किया है उसकी शुक्रगुज़ारी यही है कि उसकी मख़लूक़ के साथ एहसान और सुलूक करें और इस ख़ुदादाद फ़ज़ल पर तकब्बुर न करें और वहशियों की तरह गुरबा को कुचल न डालें। यानी लोगों की मदद की तरफ़ तवज्जो दिलाई।

अल्लाह तआला आप अलैहिस्सलाम को लोगों के मामलों के बारे में भी पहले इत्तिला दे देता। बाज़ दफ़ा अल्लाह तआला की हिकमत के तहत उनको पूरा होने में वक़्त लग जाता था। ऐसे मौक़े पर आप अलैहिस्सलाम दुआओं में लग जाते थे। और जब वो बात पूरी हो जाती तो आप अलै. इंतहाई शुक्रगुज़ारी से अल्लाह के हुज़ूर सजदा-रेज़ हो जाते।

एक वाक़िए का ज़िक्र फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा एक हिंदू बिशंबर दास बिरादर शरमपत के मुतअल्लिक़ मैंने पेशगोई की थी कि वो मुक़द्दमा फ़ौजदारी से बरी न होगा मगर उसकी निस्फ़ क़ैद बाक़ी रह जाएगी।

इत्तेफ़ाक़ से जब फ़ैसला सुनाया गया तो उसके वारिसों ने ख़िलाफ़-ए-तवक़्क़ो मशहूर कर दिया कि बिशंबर दास बरी हो गया है। मैं बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गया था तो एक शख़्स ने मुझे इत्तिला दी कि बिशंबर दास बरी हो गया है और बाज़ार में उसको मुबारकबादियाँ मिल रही हैं। मुझे बहुत सदमा हुआ कि अब हिंदू इस बात पर हमला करेंगे कि मिर्ज़ा साहब की पेशगोई पूरी न हुई। मुझे इस ग़म से एक-एक रअकत नमाज़ की एक-एक साल के बराबर महसूस हुई और जब मैं नमाज़ में किसी रकत के बाद सजदे में गया उस वक़्त मेरा इज़तरार निहायत इंतहा तक पहुँच गया। तब इल्हाम हुआ: لَاتَخَفْ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعْلٰی(ला तक़फ़ इन्नका अंतल आला)। फिर मैं मुंतज़िर रहा कि पेशगोई किस तरह पूरी होगी मगर कोई निशान ज़ाहिर न हुआ। मैं बार-बार शरमपत से पूछता रहा मगर उसने यही कहा कि वो बरी हो गया है। इसी तरह क़रीबन छह माह गुज़र गए या कम-औ-बेश। और शरीरी लोग ठट्ठा और हँसी करते थे मगर शरमपत ने कभी ठट्ठा नहीं किया। एक दिन ऐसा इत्तेफ़ाक़ हुआ कि सुबह बटाला से एक तहसीलदार क़ादियान आया। अभी वो घोड़े से न उतरा था कि हिंदू उसको सलाम करने आए। उसने बिशंबर दास को देख कर कहा कि हम इससे ख़ुश हुए कि तुम ने क़ैद से रिहाई पाई मगर तुम बरी न हुए। मैंने इस बात को सुनते ही सजदा-ए-शुक्र किया और शरमपत को पूछा तुम इतना अरसा क्यों झूठ बोलते रहे और मुझे दुख दिया? उसने कहा मुझे एक मजबूरी में झूठ बोलना पड़ा वरना रिश्ता नाता के वक़्त हमारी क़ौम में ऐसी बातों पर बहुत नुक़्ताचीनी (आलोचना) होती है और बदचलनी साबित होने पर रिश्ता मिलना मुश्किल हो जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं: कोई क़ौम नहीं जिसमें मेरे निशान ज़ाहिर नहीं हुए और कोई फ़िरक़ा नहीं जो मेरे निशानों का गवाह नहीं। अगर इन निशानों के गवाह दस करोड़ भी कहें तो कुछ मुबालग़ा नहीं होगा। मगर मुख़ालिफ़ों के हाल पर रोना आता है कि उन्होंने कुछ फ़ायदा न उठाया। अगर यह निशान जो उनको दिखलाए गए हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के वक़्त यहूदियों को दिखलाए जाते तो ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ(ज़ुरिबत अलैहिमुज़फ़िल्लतु वलमस्कनह) ज़िल्लत और मस्किनी के मुस्तहक़ न होते और अगर लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम निशानों का मुशाहेदा करती तो एक भारी ज़लज़ले से ज़मीन के नीचे न दबाई जाती। मगर अफ़सोस इन दिलों पर कि वो पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त साबित हुए और हर एक तरीक़े से उनके दिल की तारीकी बढ़ गई।

अल्लाह तआला हमें जहाँ शुक्रगुज़ारी का हक़ीक़ी इदराक अता फ़र्माए वहाँ हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हक़ीक़ी रोशनी, बसारत और मअरिफ़त भी अता फ़र्माए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131